



SHRI NIKHIL VIGNYAN DHAM

श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

अश्विन नवरात्रोत्सव - २०२६

११-१०-२०२६ से २०-१०-२०२६

ललिता पंचमी - १५-१०-२०२६

दुर्गाष्टमी (होम) - १९-१०-२०२६

विजयादशमी (दसरा) - २०-१०-२०२६

आयुद पूजन / वाहन पूजन - १९-१०-२०२६

सरस्वती पूजन - १६, १७, १८ - १० - २०२६

कोजागरी पौर्णिमा (लक्ष्मी-इंद्र पूजन) - २५-१०-२०२६

नवरात्रोत्सव में कई साधनाये संपन्न कर सकते हैं पर साधना आरंभ करने से पूर्व, साधक या साधिका, स्नान आदि से निवृत्त होकर वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा की ओर बैठें और गुरु पूजन एवं दुर्गा पूर्ण पूजन अवश्य संपन्न करे।

१) गुरु साधना:-

इस उत्सव में गुरुदीक्षा ग्रहण करे, गुरु साधना (१२५० माला) संपन्न करना श्रेष्ठ माना गया है।



२) दुर्गा साधना:-

पूजन संपन्न कर यदि नवरात्रि मे नित्य २१ माला जप, मुंगा माला से करे तो देवी कृपा प्राप्त होती है।

मंत्र : ॥ ॐ ह्रीं दुं दुगायै दुं नमः ॥

सामग्री: मुंगा माला

वस्त्र: लाल वस्त्र

जप संख्या: नवरात्रि मे नित्य २१ माला

३) भय-बाधा निवारण हेतु :-

नवरात्रि में निम्न स्तोत्र का नित्य १०८ बार का पाठ करने से संपूर्ण कुटुंब की रक्षा होती है और गृह मे कोई भय या बाधा व्याप्त हो तो दूर हो जाती है।

स्तोत्र :

आर्या दुर्गा वेद गर्भा,
अम्बिका भद्र काल्यपी ।
भद्रा क्षेमा क्षेमंकरी,
नैक बाहुर नमामी तां ।



वस्त्र: लाल वस्त्र

४) श्री-प्राप्ति:

घर में अगर "श्री" यंत्र हो तो, उसकी पूर्ण विधि से (श्री सूक्त विधान से) पूजन कर नवरात्रि में नित्य २१ माला कमलबीज माला से निम्न मंत्र का जप करे और मिष्ठान्न का भोग अर्पित करें।

मंत्र : ॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः॥

सामग्री: कमलबीज माला, "श्री" यंत्र

वस्त्र: पीले वस्त्र

जप संख्या: २१ माला नित्य

५) ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना :

दुर्गाष्टमी के दिन महालक्ष्मी यंत्र की पूजन करे ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र की २१ माला जप, मूंगा या कमलबीज की माला से जप करे।

मंत्र : ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठा लक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः॥

सामग्री: मूंगा या कमलबीज माला, महालक्ष्मी यंत्र



SHRI NIKHIL VIGNYAN DHAM

वस्त्र: रेशम या पीले वस्त्र

जप संख्या: २१ माला

यह साधना अष्टलक्ष्मी प्राप्ति हेतु सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

*** साधक चाहे तो इन दिनों में दसमहाविद्या साधनायें भी संपन्न कर सकते हैं।

६) तांत्रोक्त लक्ष्मी सिद्धि हेतु :

नवरात्रि में निम्न सहस्राक्षरी लक्ष्मी मंत्र नित्य २१ बार करने से, लक्ष्मी (महालक्ष्मी) जी की विशेष कृपा प्राप्त होती है। यदि घर पर या व्यापार पर लक्ष्मी बंधन हुआ हो तो, वह दूर हो जाता है।

सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महाविद्या मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसौं श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं सौः सौः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं जय जय महा लक्ष्मी, जगदाद्ये, विजये, सुरा
सुर त्रिभुवन निदाने, दयांकुरे सर्व देव तेजो रूपिणी विरंचि संस्थिते, विधि वरदे, सच्चिदानन्दे, विष्णु
देहावृते, महामोहिनी, नित्य वरदान तत्परे, महा सुधाब्धि वासिनि, महा तेजो धारिणि सर्वाधारे, सर्व
कारण कारिणे, अचिन्त्य रूपे, इन्द्रादि सकल निर्जर सेविते, साम गान गायन परिपूर्णोदय कारिणी,
विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व सुन्दरि, रक्तांशुके, सूर्य कोटि संकांशे, चन्द्र कोटि सुशीतले, अग्निकोटि
दहन शीले यम कोटि वहन शीले ॐ कार नाद बिन्दु रूपिणि, निगमागम भागदायिनि, त्रिदश राज्य
दायिनी, सर्व स्त्री रत्न स्वरूपिणि, दिव्य देहिनि, निर्गुणे सगुणे, सदसद रूप धारिणी, सुर वरदे, भक्त त्राण



SHRI NIKHIL VIGNYAN DHAM

तत्परे, बहु वरदे, सहस्राक्षरे, अयुताक्षरे, सप्तकोटि लक्ष्मी रूपिणि, अनेक लक्ष लक्ष स्वरूपे अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायिके, चतुर्विंशति मुनि जन संस्थिते, चतुर्दश भुवन भाव विकारिणे, गगन वाहिनि, नाना मंत्र राज विराजिते सकल सुन्दरी गण सेविते, चरणारविन्द्र, महात्रिपुर सुन्दरि, कामेश दयिते, करुणा रस कल्लोलिनि, कल्प वृक्षादि स्थिते, चिन्ता मणि द्वय मध्यावस्थिते, मणि मन्दिरे निवासिनी, विष्णु वक्षस्थल कारिणे, अजिते, अमले, अनुपम चरिते, मुक्ति क्षेत्राधिष्ठायिनी प्रसीद प्रसीद, सर्व मनोरथान पूर्य पूर्य, सर्वारिष्टान छेदय छेदय सर्व ग्रह पीडा ज्वराग्र भय विध्वंसय विध्वंसय, सर्व त्रिभुवन जातं वशय वशय, मोक्ष मार्गाणि दर्शय दर्शय ज्ञान मार्ग प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान तमो नाशय नाशय, धन धान्यादि वृद्धिं कुरु कुरु, सर्व कल्याणानि कल्पय कल्पय मां रक्ष रक्ष, सर्वायदभ्यो निस्तारय निस्तारय, वज्र शरीरं साधय साधय ह्रीं सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महा विद्यायै नमः।
